

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 663
8/02/2024 को उत्तर दिए जाने के लिए

समुद्र का बढ़ता जल स्तर

663. श्री. सी. वी. षनमुगम:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या यह सच है कि पिछले लगभग एक दशक में समुद्र के जल स्तर में अत्यधिक वृद्धि हुई है;
- (ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके क्या कारण हैं;
- (ग) क्या सरकार ने उन जोनों का विश्लेषण किया है जो समुद्र के जल स्तर में लगातार हो रही वृद्धि के कारण खतरे में पड़ जाएंगे;
- (घ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ङ) क्या सरकार के पास पर्यावासों को बचाने की कोई योजना है; और
- (च) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(श्री किरन रीजीजू)

- (क) जी हाँ।
- (ख) विश्व मौसम विज्ञान संगठन की नवीनतम रिपोर्ट "वैश्विक जलवायु की अनंतिम स्थिति 2023" के अनुसार, 2023 में वैश्विक समुद्र स्तर में वृद्धि जारी रही। इसके अलावा, हाल के दशकों में समुद्र स्तर में वृद्धि की दर तेज हो गई है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की रिपोर्ट में कहा गया है कि: "उपग्रह रिकॉर्ड की शुरुआत के बाद से समुद्र स्तर में वृद्धि की दीर्घकालिक दर दोगुनी से अधिक हो गई है, जो 1993 और 2002 के बीच प्रति वर्ष 2.14 मिमी से बढ़कर 2013 और 2022 के बीच प्रति वर्ष 4.72 मिमी हो गई है।" इसका कारण, दीर्घकालिक जलवायुवीय अथवा सुनामी या चक्रवात से संबद्ध तूफान महोर्मि के चलते क्षणिक हो सकता है।
- (ग) एवं (घ) समुद्र स्तर में वृद्धि का तटीय क्षेत्रों पर सीधे प्रभाव का अध्ययन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा नहीं किया गया है। तथापि, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान, भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (इंकोडिस) ने कई अन्य मापदंडों में से एक के रूप में समुद्र स्तर में परिवर्तन को शामिल करके निम्नलिखित अध्ययन किए हैं।
 - (i) 1:100000 पैमाने पर तटीय संवेदनशीलता सूचकांक मानचित्र समुद्र स्तर में वृद्धि, तटीय ढलान, तटरेखा परिवर्तन दर, तटीय ऊंचाई, तटीय स्थलाकृति विज्ञान, ज्वारीय सीमा और महत्वपूर्ण लहर की ऊंचाई के कारण तट पर संभावित प्रभावों के आकलन के आधार पर तैयार किए गए हैं।

(ii) इंकाँइस ने 1:25000 पैमाने पर भारत की मुख्य भूमि के लिए बहुसंकट संवेदनशीलता मानचित्र भी तैयार किए हैं। ये मानचित्र ज्वारमापी और प्रकाशित सामग्री में दर्ज किए गए चरम जल स्तर, उपग्रह डेटा से अनुमानित तटरेखा परिवर्तन दर, समुद्र स्तर परिवर्तन की दर और उच्च विभेदन स्थलाकृतिक डेटा (कार्टोसैट-1 डेटा से प्राप्त एयरबोर्न लिडार टेरेन मैपिंग, और डिजिटल टेरेन मॉडल) के संयोजन के आधार पर तैयार किए गए। बहुसंकट संवेदनशीलता मानचित्र तट के उन संभावित क्षेत्रों को दर्शाता है जहां आने वाले 100 साल की अवधि में सुनामी और तूफान महोर्मि जैसी समुद्री आपदाओं के कारण बाढ़ आ सकती है।

(iii) भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा जल स्तर में उतार-चढ़ाव, समुद्र स्तर में वृद्धि और तटरेखा परिवर्तन (कटाव या अभिवृद्धि) के कारण भूमि क्षेत्र में बाढ़ की सीमा को ध्यान में रखते हुए समय के साथ बनाने वाली 'संकट रेखा' का सीमांकन किया गया है।

(ड) जी हां।

(च) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने मछुआरा समुदायों और तटीय क्षेत्रों में रहने वाले अन्य स्थानीय समुदायों के लिए आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने, तटीय भागों को संरक्षित और सुरक्षित करने के उद्देश्य से 18 जनवरी 2019 की अधिसूचना G.S.r. 37 (ई) के माध्यम से जारी तटीय विनियमन क्षेत्र अधिसूचना 2019 को अधिसूचित किया था। उक्त अधिसूचना के अनुसार, तटीय क्षेत्रों को तटीय विनियमन क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया है, जिसमें उद्योगों की स्थापना और विस्तार, संचालन और प्रक्रिया प्रतिबंधित है तथा उक्त अधिसूचना के प्रावधानों के अनुसार अनुज्ञप्त और विनियमित गतिविधियों के लिए पूर्व मंजूरी की आवश्यकता होती है।
